देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास मौजिज़ात

हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास मौजिज़ात

पिछले सबक़ में, मैंने हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश का वाक़िया सुनाया, जो इंजील शरीफ़ में लिखा है। बहुत सारे पैग़म्बरों ने पहले से बताया था कि हज़रत ईसा अल-मसीह पैदा होंगे। फ़रिश्ते भी आए और हज़रत मरियम (अलैहस्सलाम) और दूसरे लोगों को इस बात की ख़बर दी। हज़रत ईसा अल-मसीह एक कुंवारी औरत से पैदा हुए थे। वह दुनिया में इसलिए आए कि हमारे गुनाहों की क़ुर्बानी बन कर हमें बचाएँ। उन्होंने अपनी जान क़ुर्बान की। क्या किसी दूसरे नबी की पैदाइश इतनि ख़ास थी?

आज हम हज़रत ईसा अल-मसीह के मौजिज़ात के बारे में बात करेगें। उन्होंने बीमार लोगों को ठीक किया। उन्होंने मुर्दों को ज़िंदा किया। एक बार तूफ़ान को रोका। एक बार पानी पर भी चले। क्या किसी और नबी ने इतने मौजिज़े दिखाए?

हज़रत ईसा अल-मसीह की तालीम भी बहुत ख़ास थी। उन्होंने फ़रमाया:

“राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर ख़ुदा बाप के पास नहीं आ सकता।”

हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश ख़ास थी, उन्होंने अज़ीम मौजिज़े किए, और उनकी तालीम भी ज़बरदस्त थी। लेकिन सब से बड़ी बात यह थी कि उन्होंने अपनी जान क़ुर्बान की, ताकि हमारे गुनाह माफ़ हो सकें। उन्हें दफ़्न किया गया, लेकिन तीन दिन बाद वह दोबारा ज़िंदा हुए। वह क़ब्र से ज़िंदा निकल आए, और जन्नत में चले गए। अब वह क़यामत के दिन तक वही क़याम करेंगे।

आज हम इंजील शरीफ़ का वो हिस्सा सुनेंगे जो हज़रत ईसा अल-मसीह के एक और मौजिज़े को बयान करता है। मगर उससे पहले, मैं एक सवाल मालूम करना चाहता हूँ कि

कौन गुनाह माफ़ कर सकता है? उम्मीद है कि आपका जवाब होगा: **“सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह माफ़ कर सकता है।”**

चलिए, अब हम इंजील-ए-मत्ती (9:1-8) से

कश्ती में बैठकर ईसा ने झील को पार किया और अपने शहर पहुँच गया।

वहाँ एक लक़वे के मरीज़ को चारपाई पर डालकर उसके पास लाया गया। उनका ईमान देखकर ईसा ने कहा, “बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।”

यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा दिल में कहने लगे, “यह कुफ़्र बक रहा है!”

ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा,

“तुम दिल में बुरी बातें क्यों सोच रहे हो? क्या मरीज़ से यह कहना ज़्यादा आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ और चल-फिर?’

www.taleemulkalam.org

लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार है।" यह कहकर वह लक़वे के मरीज़ से मुख़ातिब हुआ, "उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।"

वह आदमी खड़ा हुआ और अपने घर चला गया।

यह देखकर हुजूम पर अल्लाह का ख़ौफ़ तारी हो गया और वह अल्लाह की तमजीद करने लगे कि उसने इनसान को इस क़िस्म का इख़्तियार दिया है।

यह वाक़िआ हमें हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में चार अहम बातें सिखाता है:

पहली बात: हज़रत ईसा अल-मसीह ने लक़वे के मरीज़ को ठीक किया। उनकी ज़िंदगी में हमेशा बीमार लोग ठीक होते रहे। वह लोग जो लक़वे के मरीज़ के दोस्त थे, उन्होंने समझा कि सिर्फ़ हज़रत ईसा अल-मसीह उनका मददगार है। इसलिए वह अपने दोस्त को चारपाई पर उठा कर लाए। हज़रत ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया: "उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।" आदमी उठा और चला गया। आज भी जब हम किसी मुश्किल में हों, तो हमें हज़रत ईसा अल-मसीह के पास जाना चाहिए।

दूसरी बात: हज़रत ईसा अल-मसीह गुनाहगारों से मौहब्बत करते हैं। वह लक़वे के मरीज़ को जानते थे कि वह गुनाहगार है, फिर भी उसे "बेटा" कहा। हज़रत ईसा अल-मसीह उन लोगों के दोस्त हैं जो अल्लाह से दूर हैं। आप अगर आज अल्लाह से दूर हैं, तो जानिए कि हज़रत ईसा अल-मसीह आप को अपने पास बुला रहे हैं। इंजील शरीफ़ में, रोमियों की किताब के बाब पाँच की आयत आठ में लिखा है:

'लेकिन अल्लाह ने हमसे अपनी मुहब्बत का इज़हार यूँ किया कि मसीह ने उस वक़्त हमारी ख़ातिर अपनी जान दी जब हम गुनाहगार ही थे। '

तीसरी बात: इस वाक़िये का सब से बड़ा मोजिज़ा यह है कि हज़रत ईसा अल-मसीह ने इस आदमी के गुनाह माफ़ कर दिए। ठीक करने से पहले उन्होंने फ़रमाया: "बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह माफ़ कर दिए गए हैं।" अगर सिर्फ़ यही कहते तो लोग सोचते कि क्या वाक़ई गुनाह माफ़ हुए भी या नहीं। लेकिन जब उन्होंने इस आदमी को ठीक किया, तो सब ने देखा कि उनके पास वाक़ई इख़्तियार है गुनाह माफ़ करने का। यह इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह के पास होता है। आज भी हज़रत ईसा अल-मसीह आप के गुनाह माफ़ कर सकते हैं, जैसे उन्होंने इस लक़वे के मरीज़ के किए।

चौथी बात: हज़रत ईसा अल-मसीह दूसरों के दिल के ख़यालात जानते थे। जब शरीअत के उलमा उनकी बात सुन कर अपने दिल में बुरा सोच रहे थे, तो हज़रत ईसा अल-मसीह उनका ख़यालात जान गए। वह सिर्फ़ बातें ही नहीं सुनते, बल्कि वह दिलो के हाल भी जानते हैं। अगर वह दूसरों के दिलो के हाल जान सकते हैं, तो वह आप के दिल के हाल भी जानते हैं।

हज़रत ईसा अल-मसीह ने उन लोगों को अपने पास बुलाया जो अल्लाह के क़रीब आना चाहते थे। लेकिन उन्होंने उन लोगों को रोका जो अपने दिल में दिखावा करते थे। आज आप खुद सोचे कि आप किस तरह के इंसान हैं? हज़रत ईसा अल-मसीह की ज़िंदगी बहुत ताक़तवर थी। उनकी पैदाइश सब से अलग थी। उनके मोजिज़े सबसे बढ़ कर थे। आज वह आप को बुला रहे हैं कि आप अपने गुनाहों से तौबा करें और उन पर ईमान लाएँ। वह चाहते हैं कि आप उनके शागिर्द बन जाएँ। क्या आप तैयार हैं?

उम्मीद है कि आप तैयार होगें।

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.............

www.taleemulkalam.org